ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

समस्त देशवासियों को नव वर्ष चैत्र प्रतिपदा 2075
एवं आर्यसमाज स्थापना दिवस (18 मार्च) की

हार्दिक शुभकामनाएँ

वर्ष 41, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 12 मार्च, 2018 से रविवार 18 मार्च, 2018
विक्रमी सम्वत् 2074 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें– www.thearyasamaj.org/aryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्यसमाज जहांगीर पुरी नई दिल्ली की स्थापना के

40 वर्ष बाद नए भवन का उद्घाटन समारोह सम्पन्न

महाशय धर्मपाल जी, श्री धर्मपाल आर्य जी, श्री हरिओम बंसल जी, श्री सुभाष चांदना जी एवं अन्य कई महानुभावों ने की दिल्ली में हर नई आर्यसमाज के लिए भूमि क्रय हेतु दान देने की घोषणा

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य समाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन 11 मार्च 2018 को प्रात: 9 बजे महाशय धर्मपाल जी चेयरमैन एम.डी.एच. ग्रुप के करकमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ ब्रह्मा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी द्वारा यज्ञ से हुआ। यज्ञोपरान्त भारी संख्या में उपस्थित आर्यजनों के बीच श्री सुरेन्द्र खर्ब (निगम पार्षद भलस्वा, जहांगीरपुरी) निर्माण समिति अध्यक्ष द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

महाशय जी ने अपने उद्बोधन में सभी कार्यकर्त्ताओं एवं भवन निर्माण में सहयोगर महानुभावों को आशीर्वाद देते हुए कहा कि 'जीवन में दान का बहुत बड़ा महत्त्व है। जो जितना दान देता है वह उसका लाख गुना अधिक पाता है। दान का उल्लेख वेदों में भी किया गया है।' – शेष पृष्ठ 4 पर

आर्यसमाज जहांगीरपुरी के नए भवन का उद्घाटन करते महाशय धर्मपाल जी, साथ में सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं श्री सुरिन्द्र चौधरी जी।

महाशय धर्मपाल जी को स्मृति चिह्न भेंट करे आर्यसमाज के अधिकारी श्री रामभरोसे, श्री अरविन्द आर्य जी, श्री दिनेश चन्द जी एवं अन्य कार्यकर्ता

प्रदूषण निवारण के लिये 'यज्ञ' अनिवार्य है

जड़ी-बूटियों का यजन अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इससे स्थानीय पर्यावरण औषधियुक्त बनता है और उसका अनायास लाभ वहां के निवासियों को सुगंधि, स्फूर्ति तथा शान्ति के रूप में मिलता रहता है। हवन से आरोग्यवर्धक ऋणावेशित कणों का निर्माण होता है। नवीन वैज्ञानिक तथ्य का उद्घाटन किया गया है कि यज्ञ से ऋणायणों का उत्पादन और संकेन्द्रण निष्पन्न होता है।

संसार में जीवन सबसे अधिक मूल्यवान है चाहे वह प्राणी का हो या प्रकृति का। जिन्दगी का सम्बन्ध आरोग्यता से है, जिसके नष्ट होने पर रोग बढ़ते हैं। रोग बढ़ने से मृत्यु का भय बना रहता है। निरोयता दो तरह की होती है पहली व्यक्ति की और दूसरी निसर्ग की। चूंकि प्राणियों का जीवन प्रकृति पर आधारित होता है। बाह्य जगत् में जो कुछ भी है वह सब व्यक्ति के भीतर है। पिण्ड एवं ब्रह्माण्ड की एकता का प्रतिपादन शास्त्रकारों ने किया है। प्राचीन चिन्तन में कहा गया है कि ब्रह्माण्डगत अग्नि, वाणी बनकर पिण्ड के मुंह में स्थित है, वायु प्राण बनकर नासिका में, सूर्य चक्षु बनकर नेत्र में दिशाएं श्रोत्र बनकर कानों में, औषधि बनस्पति रोम रूप से त्वचा में, चन्द्रमा मन बनकर हृदय में तथा मृत्यु अपान बनकर नाभि में प्रविष्ट है। ब्रह्माण्ड का लघु मानचित्र है पिण्ड। जो कुछ ब्रह्माण्ड में है उसका अणु-अणु और तिल-तिल पिण्ड में है इसलिये प्राणि-जगत् के लिये प्रकृति की आरोग्यता आवश्यक है।

सार्वजनिक आरोग्यता के साधन हैं- सफाई, सड़क, बिजली-पानी, अस्पताल आदि। ठीक उसी प्रकार 'यज्ञ' भी महत्त्वपूर्ण है। जीवन रक्षा का स्रोत होने के कारण यज्ञ का आरोग्य सम्बन्धी विषय अन्य साधनों से प्रथम और प्रधान है। पर्यावरणीय प्रदूषण के निवारण में हवन की अपनी विशिष्ट भूमिका है। यज्ञ केवल धार्मिक कर्मकाण्ड नहीं है अपितु वैज्ञानिकता से परिपूर्ण सार्वभौम कल्याण कारक कार्य है। हवन में वैज्ञानिक दृष्टि से पदार्थों के रासायनिक अभिक्रिया के अन्तर्गत दहन (Combustion), आसवन (Distillation), ऑक्सीकरण (उपचयन) (oxidation), जल विच्छेदन (Hydralysis), – शेष पृष्ठ 8 पर

– डॉ. क

अधिकतम संख्या दिवस
1 अप्रैल, 2018

ऐतिहासिक होगा दिल्ली की आर्यसमाजों का अधिकतम संख्या दिवस

आपको विदित ही है कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा दिनांक 1 अप्रैल, 2018 को अधिकतम संख्या दिवस आयोजित किया जाएगा। आर्यसमाज के समस्त सदस्यों एवं अधिकारियों से निवेदन है कि इस दिन किसी अन्य आर्यसमाज में जाने कोई भी कार्यक्रम न बनाएं केवल अपनी आर्यसमाज में ही सपरिवार – परिवार के सभी छोटे-बड़े सदस्यों, एवं इष्टमित्रों के साथ उपस्थित हों। अधिकम उपस्थिति संख्या वाली 4 आर्यसमाजों को दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पुरस्कृत किया जाएगा। ये सभी पुरस्कार अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली के अवसर पर मुख्य मंच से प्रदान किए जाएंगे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान का निर्णय करने के मापदण्ड कई होंगे। इस सम्बन्ध में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा में लिया गया निर्णय अन्तिम एवं सर्वमान्य होगा।

अपनी आर्यसमाज की अधिकतम संख्या रखने के लिए क्या करें?

☞ समाज के समस्त अधिकारियों एवं सदस्यों को सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारने के लिए व्यक्तिगत ग्रुपों में बांटकर निवेदन करें। ☞ सभी सदस्यों को परिवार के सभी सदस्यों एवं इष्टमित्रों के साथ पधारने का निवेदन करें। ☞ ऐसे सदस्य जो कभी आर्यसमाज से जुड़े रहे हों, किन्तु आज किन्हीं कारणों से कट गए हों, उन्हें घर-घर जाकर आमन्त्रित करके उपस्थित होने का निवेदन करें। ☞ नौजवानों को यजमान के रूप में आमन्त्रित करने का प्रयास करें। ☞ मैसेज, व्हाट्सएप्प द्वारा सभी सदस्यों तक सूचना देवें। ☞ सभा की आई. टी. योजनाओं का उपयोग एवं प्रसार करने का प्रयास करें। ☞ अभी से सब सदस्यों एवं विशेष सहयोगियों की सूची बनाकर उनसे निजी रूप से सम्पर्क करने के लिए अपने अधिकारियों को जिम्मेदारी दे देवें तथा मुख्य सम्पर्क आप स्वयं करेंगे तो अधिक उपयोगी रहेगा। – ***धर्मपाल आर्य, प्रधान***

वेद-स्वाध्याय

विरोधियों की पराजय

अध्यक्षो वाजी मम काम उग्रः कृणोतु मह्यमसपत्नमेव।
विश्वेदेवा मम नाथं भवन्तु सर्वे देवा हवमा यन्तु मे इमम्।। - अथर्व. 9/2/7
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **कामः।।** छन्दः **जगती।**

शब्दार्थ - मम उग्रः कामः = मेरा प्रबल सङ्कल्प **वाजी** = ज्ञान-बल से युक्त है और **अध्यक्षः** = ऊपर से ठीक-ठीक देखनेवाला है। यह सङ्कलप **मह्यम्** = मेरे लिए संसार को **असपत्नम् एव** = सर्वथा प्रतिद्वन्द्वीरहित **कृणोतु** = कर देवे। **विश्वेदेवाः** = सब देव **मम नाथम्** = मेरे सम्बन्ध में **भवन्तु** = हो जाएं, **सर्वे देवाः** = और ये सब देव **मे इमं हवम्** = मेरी इस पुकार पर **आयन्तु** = आ जाएं।

विनय- मैं चाहता हूं कि मुझमें जो आत्मा का सङ्कल्प-बल निहित है उसके द्वारा मैं सपत्नरहित हो जाऊं। मुझे सदा जो अपने प्रतिद्वन्द्वियों से लड़ने में लगा रहना पड़ता है, मेरी वह विषम अवस्था हट जाए। इसके बिना मैं देवों के साथ कभी अपना सहज सम्बन्ध स्थापित नहीं कर सकता, अतः मैं तो सङ्कल्प-बल द्वारा अन्य कुछ सिद्ध नहीं करना चाहता, केवल अपने में देवों को स्थापित कर लेना चाहता हूं और इस प्रयोजन के लिए इससे पहले इन देवों के सब सपत्नों को, सब प्रतिद्वन्द्वियों को, काम-क्रोध आदि को, निर्मूल कर देना चाहता हूं। यह हो जाएगा तो बाकी सब अपने-आप सिद्ध हो जाएगा। ज्ञान, सत्य, प्रेम, यज्ञ, संयम, धैर्य आदि देव मुझमें सदा बसने ही चाहिए। ये मेरे आत्मा के स्वाभाविक साथी हैं, परन्तु इनके मुक़ाबले में इन्हें हटाकर मेरे हृदय में प्रभुत्व जमाने के लिए जो निरन्तर अविद्या, अस्मिता, राग (काम), द्वेष (क्रोध), लोभ आदि आते रहते हैं, ये ही मेरे प्रतिद्वन्द्वी = सपत्न हैं जिन्हें बिना हटाये मुझमें मेरे इन देवों का वास नहीं हो सकता, अतः मैं अपने प्रबल, महान् सङ्कल्प द्वारा इन अविद्या आदि व काम-क्रोध आदि सपत्नों को हटा दूंगा, परन्तु सङ्कल्प का अर्थ इच्छा नहीं है। केवल प्रबल इच्छा होने से ये सपत्न नहीं हट सकते। इसके लिए ज्ञान आवश्यक है। बिना ज्ञान हुए काम-क्रोध आदि को नहीं हटाया जा सकता। यूं ही दबाने से ये दबने वाले नहीं हैं, बल्कि हठात् दबाने से तो ये और वेग से उठते हैं। इसके लिए मुझे आवश्यकता है- आत्मसङ्कल्प की, आत्मा के सङ्कल्प की, 'कामः' की, क्योंकि आत्मसङ्कल्प 'वाजी' होता है, ज्ञान-बल से युक्त होता है और यह 'अध्यक्ष' होता है। यह मेरे मूर्धा में, ब्राह्मस्थान पर, आत्मा के साथ स्थित रहता है और वहीं से सब क्रियाओं की अध्यक्षता करता है। यही मनुष्य में एक आत्मबल है; यही सच्चा सङ्कल्प है; इच्छा का नाम सङ्कल्प नहीं है। इस वाजी, अध्यक्ष, आत्मसङ्कल्प द्वारा गहरे-से-गहरा बद्धमूल काम-क्रोध व राग-द्वेष आदि सपत्न उखड़ जाएगा, अतः मैं अपनी ज्ञानमय बलवान् अध्यक्ष आत्म-शक्ति को ऊपर से प्रेरित करता हूं कि यह अपने अदम्य, अमोघ बल से काम-क्रोध आदि प्रतिद्वन्द्वियों को निवृत्त करके मुझे असपत्न कर दे और तब सब मेरे आत्मीय देव मुझसे सहज सम्बन्ध से जुड़े हुए हो जाएं। असपत्न हो जाने पर मेरे सङ्कल्प की इस पुकार से सब-के-सब दिव्यभाव मुझमें आ जाएं। ये देव मुझमें ऐसे बस जाएं, मुझमें ऐसे सम्बद्ध हो जाएं कि मैं अपने सङ्कल्प द्वारा जब जिस दिव्यभाव को, जब जिस देव को, उद्बुद्ध करना चाहूं उसी समय वह उद्बुद्ध हो जाए।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

साप्ताहिक धार्मिकता में डूबता समाज

बेशक आज जमाना तकनीक, ज्ञान, विज्ञान का कहा जाता हो पर विज्ञान के माध्यम से भी अज्ञानता आज मनुष्य के जीवन के हर पहलू को प्रभावित कर रही है। कहने को आज हर एक मनुष्य धार्मिक है लेकिन धार्मिकता स्थाई नहीं है। किसी के जीवन में एकदिवसीय तो किसी के जीवन में साप्ताहिक और किसी के जीवन में वार्षिक भी होती है। उदाहरण स्वरूप एक कबूतर शाकाहारी है तो क्या ऐसा हो सकता है सप्ताह में एक दिन मांसाहारी भोजन ले? शायद नहीं! क्योंकि उसका धर्म उसे इस कृत्य के लिए बिल्कुल प्रेरित नहीं करेगा। इस कारण कबूतर अपने धर्म की इस धार्मिकता का आजीवन पालन करता है।

लेकिन इन्सान के मामले में ऐसा नही है। यहाँ लोग सप्ताह में दिखावे को एक दिन धार्मिकता का बखान करते हैं। तो कुछ लोग वर्ष में एक बार। अभी कई रोज पहले दो लोग मेट्रो में बात कर रहे थे, एक ने दूसरे से कहा चल पार्टी करते हैं, दूसरे ने कहा-नहीं यार आज मंगलवार है, आज के दिन मैं शराब और मांस नहीं लेता। मतलब यह था कि ये बंधुवर सिर्फ सप्ताह में एक दिन धार्मिक होते हैं। बाकी दिन ये हर वह कार्य करेंगे जो अनुचित है। इस कारण आप इन्हें एकदिवसीय धार्मिक कह सकते हैं।

असल सवाल यह है कि यदि कोई इन्सान धार्मिक है तो सिर्फ सप्ताह में एक ही दिन धार्मिक क्यों? क्या अब धार्मिकता सिर्फ साप्ताहिक बनकर रह गयी? खुद से सवाल कीजिये जो लोग शनिवार को लोहा नहीं खरीदते, मंगलवार को दारू नहीं पीते, फला दिन शेविंग या बाल नहीं कटाते, क्या वे धार्मिक हैं? यदि नहीं तो यह साप्ताहिक धार्मिकता का दिखावा क्यों? सिर्फ अपने इर्द-गिर्द जमा समाज या रिश्तेदारों को दिखाने के लिए?

देश की तमाम अज्ञानता आज सर्वोच्च शिखर की बुलंदियों को साप्ताहिक धार्मिकता बनकर छू रही है। मसलन शुभ कार्य कौन से दिन करने चाहिए, शुभ कार्यो के लिए सही दिन, अशुभ कार्यों के लिए सही दिन, सप्ताह के इन दिनों में ये काम करने चाहिए, हफ्ते के कौन से दिन कौन सा कार्य करें, हफ्ते के हर दिन का महत्त्व आसानी से बेचा जा रहा है।

साप्ताहिक धार्मिकता यहीं नहीं रुकती आप किसी धार्मिक वेबसाइट पर जाइये या किसी चबूतरे पर बैठे पंडित के पास, वह तुरन्त बतायेगा कि महिलाओं को गुरुवार के दिन बाल नहीं धोना चाहिए। इस दिन शेविंग नाखून काटने से उम्र कम हो जाती है, गृह कमजोर हो जाते हैं आदि आदि। ये लोग हर बात में यह बोलना नहीं भूलते कि हिन्दू मान्यताओं वास्तु शास्त्र के अनुसार इस दिन यह नहीं करना चाहिए, वह नहीं करना चाहिए। ऐसी ही एक वेबसाइट है- शुभतिथि डॉट कॉम यह तो और भी चार कदम आगे है। इस पर लिखा है कि मंगलवार के दिन दो लोगों में फूट डालना, चोरी करना, विष पीना, अग्नि का कार्य करना, शास्त्र से संबंधी क्रय-विक्रय करना, किसी से लड़ाई करना, किसी के साथ धोखा करना, रत्नों से जुड़े कार्य करना आदि ठीक माना जाता है। अब सोचिये! सीधे तौर पर यह वेबसाइट धर्म के नाम पर मंगलवार को चोरी, हिंसा जैसे कार्यों की प्रेरणा मंत्रमुग्ध भाव से परोस रही है।

बाबा महाकाल नाम की वेबसाइट तो धर्म को पुर्जो की भांति बेच रही है, जिसे देखकर लगता है कि यदि ये लोग 'न' होते तो संसार दुःख के सागर में डूबकर मर

...साप्ताहिक धार्मिकता यहीं नहीं रुकती आप किसी धार्मिक वेबसाइट पर जाइये या किसी चबूतरे पर बैठे पंडित के पास, वह तुरन्त बतायेगा कि महिलाओं को गुरुवार के दिन बाल नहीं धोना चाहिए। इस दिन शेविंग नाखून काटने से उम्र कम हो जाती है, गृह कमजोर हो जाते हैं आदि आदि। ये लोग हर बात में यह बोलना नहीं भूलते कि हिन्दू मान्यताओं वास्तु शास्त्र के अनुसार इस दिन यह नहीं करना चाहिए, वह नहीं करना चाहिए।...

जाता। इस पर लिखा है शनिवार के दिन सरसों का तेल खरीदना बहुत अशुभ माना जाता है। इससे घर में अशान्ति फैलती है। लेकिन सरसों के तेल का दान करना बहुत शुभ माना जाता है। इससे शनिदेव प्रसन्न होते हैं। रविवार के दिन बाल न कटवाएं, सरसों के तेल की मालिश न करें, तांबे की चीजों का क्रय-विक्रय न करें, इत्यादि। भला जब शनिवार को तेल खरीद नहीं सकते जो घर में था उसका दान कर दिया रविवार को लोग सरसों के तेल की मालिश कैसे करेंगे?

ये पौराणिक वेबसाइट ही नहीं आप देश के प्रमुख न्यूज चैनलों, अखबारों की वेबसाइट और फेसबुक पेज भी देख लीजिये उन पर भी अंधविश्वास का डमरू कितनी शालीनता और धार्मिक भावना से ओतप्रोत होकर बजाया जा रहा है। खबर इंडिया डॉट कॉम लिख रहा है कि अगर आप भी माता की कृपा पाना चाहते हैं तो शुक्रवार के दिन उस जगह जाएं, जहां पर मोर नृत्य करते हैं। वहां की मिट्टी लाकर एक लाल रंग के कपड़े में बांधकर पवित्र जगह में रख दें और उसकी रोज पूजा करें। साथ ही कभी शाम के समय घर में झाड़ू न लगाएं इससे घर की लक्ष्मी बाहर चली जाती है। घर पर ऐसी पेड़ की टहनी लेकर आएं जिसमें चमगादड़ बैठते हो और ऐसी जगह पर रखे जहां पर उसे कोई देख न पाए।

स्कूल में बचपन से किताबों में यही पढ़ाया जाता रहा है कि सदा सच बोलो और झूठ बोलना पाप के समान है। मगर इसी झूठ से आज अंधविश्वास की दुकानों में खूब मुनाफा कमाया जा रहा है, वह भी उसी धर्म के नाम पर जिसमें सच बोलने की सीख दी जाती है। 21वीं सदी में विज्ञान इंसान को चांद पर बसाने की कोशिश कर रहा है। लेकिन विज्ञान से ज्यादा आज लोग अंधविश्वास और साप्ताहिक धार्मिकता में अपनी मुसीबतों का इलाज तलाश रहे हैं।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि इन ज्योतिष बाबाओं को मीडिया का सहयोग हासिल है। इनकी साइटें हैं, ब्लॉग हैं और जिन पर गरीबी, बीमारी को दूर करने से लेकर हर समस्या के समाधान की बात लिखी हुई है। इक्कीसवीं सदी में अंधविश्वास वैज्ञानिक सोच वालों के लिए चुनौती है। सरकारें चुप हैं और मीडिया ऐसे ढ़ोंगियों के प्रसार का सहयोगी। इसी अनदेखी का ही नतीजा है कि अंधविश्वास फैलाने वालों का बड़ा नेटवर्क इंटरनेट पर छाया हुआ है। विडम्बना तो यह है कि जिस अन्धविश्वास को विज्ञान मानने से इन्कार करता रहा है आज उसी विज्ञान की तकनीक के सहारे यह जाल बिछा लिया गया है। इसमें अंतिम सवाल यह है कि यदि कोई धर्मगुरु आपको कहे कि गंगा का उदगम स्थल हरिद्वार है तो आप कहेंगे जी नहीं, हमने भूगोल में पढ़ा है गंगा का उद्गम स्थल हरिद्वार नहीं, बल्कि गंगोत्री है। लेकिन जब बात धर्म की आती है लोग अपने वेद ग्रन्थ छोड़कर बिना सोचे-समझे बिना विचार किये किसी भी धर्म गुरु, ज्योतिष, पंडित की कोई भी बात मान लेते है ऐसा क्यों? - ***सम्पादक***

बर्मा के बाद श्रीलंका, क्यों है दुनिया से मुस्लिम टकराव

.....कहा जाता है कि दुनिया में 56 मुसलमान राष्ट्र हैं लेकिन वास्तविकता यह है कि एक देश में जितनी विचारधारा के मुसलमान हैं वे अपनी सत्ता स्थापित करने की जुगाड़ लगाते रहते हैं। इसलिए इन देशों में मुसलमानों के अनेक गुट सत्ता हथियाने के लिए लड़ने और युद्ध करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं। जिन देशों में उनकी संख्या कम होती है वे पहले तब्लीग और कन्वर्जन के नाम पर अपना संख्याबल बढ़ाते हैं।.....

बर्मा (म्यांमा) में बौद्ध और रोहिंग्या मुसलमानों के बीच हुई हिंसा की चिंगारी अब श्रीलंका तक जा पहुंची निकट भविष्य में स्थिति क्या होगी अभी सहज परिकल्पना ही की जा सकती है। खबर है श्रीलंका में पिछले हफ्ते मुस्लिम भीड़ के हमले में एक सिंहली बौद्ध व्यक्ति की मौत की खबरों के बाद चार मार्च को कैंडी जिले में हिंसा भड़क उठी थी। इस घटना के बाद सिंहली बौद्ध समुदाय के लोगों ने मुसलमानों के घरों और दुकानों पर हमले किए जिसके बाद वहां आपातकाल लागू किया गया था। कहा जाता है मध्यकाल के अंधकारपूर्ण दौर में दो धर्मों के बीच लंबी लड़ाई चली थी। आज एक बार फिर से दुनिया उसी ओर जाती दिख रही है लेकिन अब अलग-अलग धर्म आमने-सामने हैं। इस्लाम का एक उग्र चेहरा दुनिया के सामने देखने को मिल रहा है। आज की समस्या यह है कि क्रूसेड काल के विपरीत आज अब यह टकराव सिर्फ ईसाईयत और इस्लाम का नहीं रह गया है। जो सोच और धारणाएं बन रही हैं उनमें इस्लाम आज बाकी दुनिया के दूसरे धर्मों और पंथों के साथ टकराव की हालत में दिखता है। यही नहीं विरोधी इस तर्क पर भी आते हैं कि खुद इस्लाम का अपने ही भीतर दूसरे विचारों से टकराव चल रहा है। इस्लामी आतंकवाद और इस्लाम के भीतर अतिवाद जैसी सोच पिछले कुछ दशकों में पूरी दुनिया में धड़ल्ले से चल निकली हैं। चाहे इसमें पेरिस के नीस शहर में हमला हो, भारत में ताज होटल हो। म्यांमार, लंका, बाली, इंडोनेशिया में यही स्थिति है, यूरोप, रूस और अमेरिका भी इसकी चपेट में हैं।

आज विश्व में जहाँ भी टकराव है, हिंसा है उसके पीछे एक चेहरा कहीं न कहीं इस्लाम का जरूर दिखाई देता है। यदि इसमें मध्यकाल की इस्लाम के नाम पर हुई हिंसा को अलग रखकर भी बात करें तो जब हिंसा या आतंकवाद की जड़ें बीसवीं सदी के मुस्लिम विचारकों तक पहुंचती हैं, जिन्होंने यह विचार दिया था कि इस्लाम एक पूर्ण व्यवस्था है और राजनीतिक शक्ति इसका एक जरूरी हिस्सा है, क्योंकि इसके बगैर इस्लाम को एक संपूर्ण जीवन पद्धति के तौर पर लागू नहीं किया जा सकता। जब उन्होंने देखा कि राजनीतिक पद तो पहले से किसी और समूह के कब्जे में है। ऐसे में उन्हें लगा कि इस्लामिक राज्य की स्थापना के लिए मौजूदा शासकों को पद से हटाना अनिवार्य है जिसके लिए संख्या बल भी बढ़ाना जरूरी है। जो लोग राजनीतिक इस्लाम में विश्वास करते थे उन्होंने पुराने शासकों को रास्ते से हटाने के लिए हिंसा और आतंक का सहारा लिया जो अभी तक जारी है।

दरअसल यह टकराव आज लुका-छिपी का नहीं रहा, एशिया से लेकर यूरोप और अमेरिका भर में, धार्मिक अतिवाद बढ़ रहा है। कुछ समय पहले बीबीसी से जुड़ी धार्मिक संबंधों की पत्रकार केरोलिन व्हाइट का इस संबंध में एक विस्तृत आलेख प्रकाशित हुआ था। वह कहती है कि एक बात सर्वविदित है कि सभी पंथों की जननी एशिया महाद्वीप की भूमि है, लेकिन विज्ञान और आधुनिकता का अधिकतम रिश्ता यूरोप से जुड़ा हुआ रहा है। यहीं से संघर्ष प्रारम्भ होता है। आधुनिकता की व्याख्या से इस प्रकार के टकराव केवल इस्लाम का अन्य पंथों से ही नहीं बल्कि उनके अपने पंथ और सम्प्रदाय भी आपस में झगड़ते हैं और समय आने पर युद्ध के मैदान में भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराने से नहीं चूकते। इसलिए शिया सुन्नी टकराव तो इस्लाम के बहुत प्रारम्भ में ही शुरू हो गया था। यह टकराव खिलाफत को लेकर हुआ था। वहां से सुन्नी और शिया के रूप में मुसलमानों का बंटवारा होता चला गया। जब सत्ता मिलने लगी तो भी उनका यह बुखार नहीं उतरा बल्कि दिनों दिन बढ़ता चला गया। आज भी विश्व राजनीति में शियाओं का नेता ईरान है और सुन्नियों का सऊदी अरब। मामला शिया सुन्नी तक के विभाजन का होता तो यह मान लिया जाता कि अन्य पंथों की तरह यहां भी वैचारिक और व्यक्ति के आधार पर दो फाड़ हो गए। लेकिन इस्लाम तो इतने फिरके और पंथ में बंटा है कि सारी हदों को पार कर गया है। हर फिरके की अपनी सोच है जो कहीं न कहीं राजनीति से जुड़ी हुई है। अपने पंथ की हुकूमत कायम हो जाए बस यही उलझन बनी रहती है।

केरोलिन व्हाइट लिखती है कि दुनिया का शायद ही कोई धर्म हो जिसका दो फाड़ हुआ हो लेकिन इस्लाम के पंथ तो इतनी बड़ी तादाद में हैं कि अब उनकी गिनती भी कठिन है। न जाने कौन सा मौलवी उठे और अपनी सनक के अनुसार फिर एक नया फिर्का बना ले। इसके पीछे मजहबी भावना कम और सत्ता हड़पने की भावना अधिक होती है। भले ही वह किसी देश या जमीन के भाग पर अपनी सल्तनत स्थापित न कर सके लेकिन व्यक्तियों के समूह पर तो अपने विचार लादकर अपने मन को शांत कर ही सकता है! इसलिए मामला राष्ट्रीय हो या अंतर्राष्ट्रीय अथवा स्वयं इस्लाम के पंथ और सम्प्रदाय के बीच वह दो भागों में विचारधारा के नाम पर बहुत जल्द बंट जाता है। अधिक तादाद होने पर वह किसी देश की मांग करने लगता है। इसलिए धरती का बंटवारा जो राष्ट्रों के बीच में हुआ है, उन्हें तो येन-केन प्रकारेण अपने देश चाहिए जहां वे अपने नियमों और सिद्धांतों के आधार पर भौतिक सुखों का आनंद ले सकें।

केरोलिन यही नहीं रुकती वह आगे कहती हैं कि कहने को कहा जाता है कि

- शेष पृष्ठ 7 पर

बोध कथा ## मोह ममता के रिश्ते हैं सब, कोई नहीं यहां अपना रे!

एक था नौजवान! देखने में सुन्दर, स्वस्थ, वैसे बहुत अच्छा, परन्तु कुसंगत में पड़कर बिगड़ गया। एक दिन ऋतु बहुत अच्छी थी। भीनी-भीनी वायु चल रही थी। वह अपने मकान की छत पर खड़ा होकर पतंग उड़ा रहा था कि डोर टूट गई। पतंग शहर से परे जंगल के अन्दर एक साधु की कुटिया के पास जा गिरी। महात्मा ने पतंग उठाई, अपनी कुटिया में ले-जाकर रख दी।

तभी पतंग को ढूंढता हुआ वह युवक भी वहां आ पहुंचा। महात्मा के पास जाकर बोला-''आपने यहां कोई पतंग गिरती हुई तो नहीं देखी?''

महात्मा ने कहा-'हां, बेटा, देखी तो है।' युवक ने पूछा-'कहां है?'

महात्मा बोले- 'अन्दर मेरी कुटिया में रखी है।' युवक ने कहा-'यह पतंग मेरी है।' महात्मा बोले-'तेरी है बच्चा तो तू ले जा। मैं तेरी पतंग का क्या करूंगा!' पतंग देकर महात्मा ने पूछा- 'बेटा, क्या तू प्रतिदिन इस प्रकार पतंग उड़ाता है?'

युवक ने कहा- 'नहीं जी! कभी-कभी उड़ाता हूं। जब मित्र न आयें और जब ताश व जुए का दौर न चले तो अकेला मैं क्या करूं?'

महात्मा बोले-'तो तू ताश और जुआ भी खेलता है?' युवक ने कहा-'जब कभी पीने-पिलाने का अवसर न मिले, मित्र लोग आये हों, तब फिर क्या करें?'

महात्मा बोले-'अरे! तू शराब भी पीता है?' उसने कहा-'जी हां! यदि वेश्याओं के यहां जाने, नाच देखने और गाना सुनने का अवसर न मिले तो..'

महात्मा चिल्लाकर बोले-'अरे, तो तू यह कर्म भी करता है? किस ओर जा रहा है तू? किसने तुझे सर्वनाश के मार्ग पर चला दिया? यह तो मृत्यु का मार्ग है बच्चे! जीवन का मार्ग नहीं है। देख, धोखे में न रह! यौवन केवल एक बार आता है जीवन में, चला जाए तो फिर नहीं आता। अरे, क्यों नष्ट कर रहा है यौवन को? आज तेरे शरीर में शक्ति है, आंखों में ज्योति, मुख पर सौन्दर्य, हाथों में बल है। आज यदि सुमार्ग पर न आया तो फिर प्रयत्न करने पर भी नहीं आ पायेगा। आज तू पहाड़ों का सीना चीर सकता है। तूफ़ानों को ललकार सकता है। सागरों की छाती पर सवार हो सकता है। आज तुझे सूर्य और चन्द्रमा खिलौने प्रतीत होते हैं, परन्तु समय आयेगा, जब तू हाथ हिलाना चाहेगा और वह हिलेगा नहीं। पांव से चलना चाहेगा और वे चलेंगे नहीं। आज तेरी आंखें आकाश में देखती हैं, परन्तु समय आयेगा, जब पास रखी लाठी भी तुझे दिखाई न देगी। अभी समय है, संभल सके तो संभल, नहीं तो फिर यह समय कभी आयेगा नहीं।'

महात्मा ने इस प्रकार कहा तो नौजवान चौंका। महात्मा की वाणी में प्रभाव था। वे सच्ची बात कह रहे थे। इससे युवक के मन पर चोट लगी और वह बेचैन हो उठा; हाथ जोड़कर बोला-'महाराज! ऐसी बात कभी पहले नहीं सुनी। आप आज्ञा दें तो कभी-कभी आपके पास आ जाया करूं।' महात्मा ने कहा-'तुम जब भी चाहो, आ सकते हो। मेरे यहां कोई रोक-टोक नहीं।'

- शेष अगले अंक में

- महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती

साभार : बोध कथाएं

बोध कथाएँ: वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

आर्यसमाज पोर्ट ब्लेयर (अंदमान-निकोबार) का वार्षिकोत्सव समारोह छः दिवसीय वेद कथा के साथ सम्पन्न

14 से 21 फरवरी 2018 तक पोर्ट ब्लेयर के जंगली घाट के राधा कृष्ण मंदिर में छह दिनों तक वेदोंपदेश प्रवचन का सम्पन्न हुआ। होशंगाबाद (मध्य प्रदेश) के आचार्य आनंद पुरुषार्थी जी एवं मेरठ (उत्तर प्रदेश) के पंडित अजय आर्य जी (भजनोपदेशक) ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। चेन्नई आर्यसमाज के प्रधान श्री धनञ्जय जोशी भी सपत्नीक पोर्ट ब्लेयर पहुंचे साथ में तमिल हिन्दी व अंग्रेजी तीनों भाषाओं का वेद साहित्य भेंट स्वरुप साथ लाया गया जिसे आगन्तुकों को निशुल्क बांटा गया। बंगाल आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री दीनदयाल जी व बंगाली भाषा के प्रचारक आचार्य श्री योगेश शास्त्री जी बंगाली वैदिक साहित्य के साथ पधारे, बंगली वैदिक साहित्य बंगाली महानुभावों को भेंट किया गया। रंगाचांग ग्राम के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एवं रविन्द्र बँगला सीनीयर सेकेंड्री स्कूल इन दोनों में उपदेश भजन का कार्यक्रम भी सम्पन्न हुआ। आर्य समाज पोर्ट ब्लेयर के प्रधान श्री सुरेश चतुर्वेदी जी ने सभी को धन्यवाद किया व सभी को सूचना दी कि रविवार का सत्संग निरंतर जारी है। यूनियन बैंक के सामने जिसके लिए श्री शशि मोहन जी ने अपने घर की छत उपयोग हेतु उपलब्ध कराई है। सेलुलर जेल तथा दूसरे द्वीपों पर पर्यटन के लिए सभी अतिथियों की व्यवस्था आर्यसमाज की तरफ से की गई है।

- सुरेश आर्य, मंत्री

अन्दमान निकोबार की राजधानी पोर्ट ब्लेयर में कार्यरत आर्यसमाज में प्रवचन देते वैदिक विद्वान् श्री आनन्द पुरुषार्थी जी। पोर्ट ब्लेयर के सरकारी विद्यालय में प्रवचन एवं आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं एवं अधिकारियों के साथ आचार्य जी तथा अन्य महानुभाव।

प्रथम पृष्ठ का शेष 39वां वार्षिकोत्सव एवं नए .....

आर्य समाज जहांगीरपुरी की ओर से 39वें वार्षिकोत्सव पर 3 से 10 मार्च तक योग प्राणायाम शिविर एवं 11 मार्च को 21 कुण्डीय यज्ञ एवं भवन उद्घाटन का कार्यक्रम बहुत ही जोरशोर से मनाया गया। श्री सुमन के कर्णप्रिय भजन नित्य आर्यजनों का उत्साहवर्धन करते रहे। आर्य समाज जहांगीरपुरी की ओर से इस अवसर पर जहांगीरपुरी मेट्रो स्टेशन, अस्पताल, मेन रोड, पुलिस स्टेशन एवं फायर ब्रिगेड तक झंडे, होर्डिंग, बैनर, झंडियों से सजावट की गई। महाशय धर्मपाल जी की अगवानी ब्रह्मप्रकाश चावला बैंड मास्टर ने विद्यालयों के बच्चों के साथ बैंड-बाजे के साथ की। मोटर साईकिलों एवं कारों के सामूहिक जुलूस के रूप में महाशय जी को समारोह स्थल तक लाया गया।

इस अवसर पर सर्वश्री धर्मपाल आर्य प्रधान, श्री विनय आर्य महामंत्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), शिव कुमार मदान उपप्रधान, विद्यामित्र ठुकराल कोषाध्यक्ष, अरुण प्रकाश वर्मा मंत्री, सुरेन्द्र कुमार रैली प्रधान (उत्तर पश्चिम दिल्ली वेद प्रचार मण्डल), सतीश चड्ढ़ा महामंत्री (आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य), योगेश आर्य आस्ट्रेलिया आर्य समाज ने उपस्थित होकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा आर्य समाज जहांगीरपुरी के सर्वश्री दिनेश चन्द प्रधान, रामभरोसे मंत्री, अरविन्द आर्य कोषाध्यक्ष के साथ-साथ केन्द्रीय सभा दिल्ली के अधिकारीगण एवं आर्य समाज के सभी सदस्यों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में अपनी-अपनी विशेष भूमिका अदा की।

जहांगीरपुरी के स्कूल- आर्य हंसराज मॉडल स्कूल, कौशल पब्लिक स्कूल, मूर्तिदेवी आर्या स्कूल एवं न्यू मान्टेसरी पब्लिक स्कूल के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये। आर्य समाज के नवनिर्मित भवन का निर्माण करने में जिन महानुभावों ने अपना योगदान दिया उन सभी को सम्मानित किया गया। शांतिपाठ व ऋषि लंगर के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

- राम भरोसे, मंत्री

(ऊपर) 21 कुण्डिय यज्ञ सम्पन्न कराते यज्ञ ब्रह्मा आचार्य प्रेमपाल शास्त्री जी एवं यज्ञ करते श्रद्धालु, महिला, पुरुष एवं बच्चे।
(नीचे) महाशय धर्मपाल जी से आशीर्वाद प्राप्त करते निगम पार्षद श्री सुरेन्द्र खर्ब, सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति एवं कार्यकर्ताओं को सम्मानित करते सभा प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं उप प्रधान श्री शिव कुमार मदान।

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो 5,10,20 किलो की पैकिंग
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 1, मो. 9540040339

पृष्ठ 3 का शेष

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी ऐतिहासिक घटना के साक्षी बने

गुरुकुल खंड सूपा (गुजरात) का 95वां वार्षिकोत्सव 18 फरवरी 2018 को सार्वदेशिक सभा, दिल्ली के प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। श्री आर्य इस दिन एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटना के साक्षी बने। 100 वर्ष पूर्व सन् 1918 में श्री चतुरभाई तथा श्री हरगोविन्द भाई ने इस क्षेत्र के कुछ शिक्षण प्रेमियों के साथ एक सभा का आयोजन करके यह निश्चय किया था कि महर्षि दयानन्द जी की जन्म-शताब्दी पर गुरुकुल कांगड़ी, हरिद्वार की शाखा के रूप में खड़सूपा विस्तार में भी एक गुरुकुल की स्थापना करेंगे। अपने निश्चय को साकार करने के लिए उन्होंने अद्भुत परिश्रम किया। चार-पांच वर्षों की कठिन तपस्या के बाद 32 सभासद बनाकर संस्था का प्रथम संविधान तैयार किया और बाद में 16 सभासद और बनाकर कुल 48 सभासदों की जमा कराई राशि से तथा अन्य दान और सहयोग से पचास हजार रुपये एकत्र किये गये। तत्पश्चात् 28 मई 1923 को श्री दयालजी भाई लल्लु भाई की अध्यक्षता में एक बड़ी सभा का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना आशीर्वाद देते हुए सभी का उत्साह वर्धन किया और पचास हजार रुपये की राशि को बैंक ऑफ बड़ौदा में जमा करके गुरुकुल के उपयुक्त स्थल का चयन करके जमीन खरीदने का निश्चय किया गया। 18 अक्टूबर 1923 को गुरुकुल की स्थापना के लिये 22 बीघा जमीन 7125 रुपये 8 आने तथा 3 पाई में खरीदी गई और 18 फरवरी 1924 को महाशिव रात्रि के दिन गुरुकुल सूपा का उद्घाटन स्वामी श्रद्धानन्द जी के कर कमलों द्वारा सम्पन्न हुआ। प्रारम्भ में 30 विद्यार्थियों के लिए की गई व्यवस्था में 29 विद्यार्थियों ने गुरुकुल में प्रवेश लिया जिनकी संख्या निरन्तर बढ़ती गई।

श्री सुरेश जी ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में यह कहते हुए प्रसन्नता व्यक्त की कि 1924 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित यह गुरुकुल आज एक वट वृक्ष का रूप ले चुका है। इस गुरुकुल का सम्पूर्ण परिसर अत्यन्त शांत, सुन्दर और मनोहारी है।' उन्होंने कहा कि 'गुरुकुलों के द्वारा ही भारत की वैदिक संस्कृति की रक्षा सम्भव है। उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस गुरुकुल के विद्यार्थी वैदिक संस्कारों से सिंचित होकर स्वयं की, समाज की तथा राष्ट्र की उन्नति में निश्चित रूप से श्रेष्ठ भूमिका निभाएंगे।' इस अवसर पर गुरुकुल ट्रस्ट के प्रमुख श्री मनहरभाई पटेल द्वारा श्री सुरेश आर्य का शाल पहनाकर स्वागत किया और अनुरोध किया कि वह गुरुकुल में निरन्तर आकर सभी का उत्साहवर्धन करते रहेंगे। शान्ति पाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। - ***आचार्य***

मैं आर्य समाजी कैसे बना?

रूपलाल जी की प्रेरणा से मैं आर्य समाजी बन गया

मेरे पिता जी की फल-सब्जी की दुकान हौज काजी दिल्ली-06 में थी। कमेटी के स्कूल से चौथी कक्षा पास करने के बाद पिता जी ने अपने व्यवसाय में लगा लिया। मैं भिन्डी छांट रहा था। कॉर्मशियल स्कूल के प्रिन्सिपल श्री रूपलाल जी और बाजार सीताराम आर्य समाज के प्रधान भी थे। उन्होंने मेरे पिता जी से पूछा यह लड़का किसका है यह पढ़ने क्यों नहीं जाता है। पिता जी ने कहा यह मेरा बेटा है। इसने चौथी पास की है अब यह मेरा सहयोग करता है।

प्रिन्सिपल साहब ने कहा कि तुम इसे लेकर स्कूल में आओ मैं इसे 5वीं में दाखिल कराऊंगा।

कॉमर्शियल में लाला लोगों के बच्चे पढ़ते थे। बड़ा नामी स्कूल था। मुझे दाखिल कराया और आर्य समाज बाजार सीताराम का आर्य बाल युवक का सदस्य बना दिया। तब से 1942 से आर्य समाज से जुड़ गया। आर्य समाज के अनेक पदों पर रहा। आर्य सार्वदेशिक सभा के विदेशों के अधिवेशन मॉरीशस, लंदन, नैरोबी आदि देशों में भाग लिया। इस प्रकार मैं आर्य समाजी बन गया।

- मामचन्द रिवाड़िया, पूर्व मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा, दिल्ली

पुस्तक परिचय

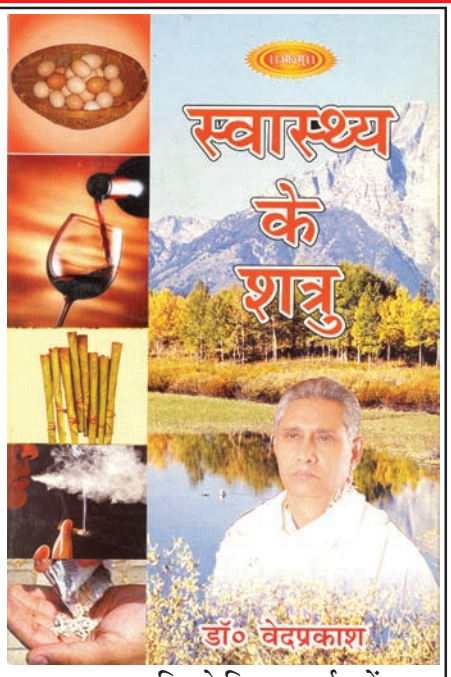

मनुष्य स्वयं को संसार के समस्त प्राणियों से ऊंचा या श्रेष्ठ मानता है, परन्तु उसे इतना भी ज्ञान नहीं है कि वह क्या खाए और क्या न खाए? संसार के समस्त पशु-पक्षी यह जानते हैं कि उन्हें क्या खाना है और क्या नहीं खाना? संसार में पशु-पक्षियों को आहार की शिक्षा कहीं भी नहीं दी जाती। उन्हें तो परमात्मा की कृपा और उसके विधानानुसार जन्म से ही यह ज्ञान होता है कि उसे क्या खाना है और क्या नहीं खाना?

सुहृद पाठकों से निवेदन है कि वे डॉ. वेद प्रकाश द्वारा लिखी पुस्तक 'स्वास्थ्य के शत्रु' पुस्तक को मनोयोग पूर्वक पढ़कर स्वयं लाभ उठाएं तथा संसार के कल्याण हेतु अधिक-से-अधिक पाठकों को पढ़वाएं।

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें:-
वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001,
मो. नं. 9540040339

मातृशक्ति

पयस्वन्तः

गतांक से आगे -

ऋग्वेद गाय की महिमा का वर्णन करते हुए कहता है-

यूयं गावो मेदयथा कृशं चिदश्रीरं चित्कृणुथा सुप्रतीकम्। भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहद्वो वय उच्यते सभासु।।

-ऋ. 6/28/6

'हे गौओ! तुम कमजोर को भी बलवान् बना देती हो। बेडौल को भी सुन्दर और सुडौल कर देती हो। जहां तुम्हारी कल्याणकारिणी सुमधुर आवाज सदा सुनाई देती है उस घर का, उस परिवार का सदा कल्याण ही होता है।'

वास्तव में प्रभु ने अपनी रचना में प्राणियों के पोषणार्थ जितने भी फल, फूल, अन्न, शाक आदि पदार्थ बनाए हैं। उन सबमें यदि कोई सर्वश्रेष्ठ पोषक तत्त्वों से भरपूर पदार्थ है तो वह दूध है। दूध न केवल मानव प्रत्युत समस्त प्राणियों का प्राण तथा जीवन है। विधाता की रचना में दूध ही एक ऐसा पदार्थ है, जो सब प्राणियों के लिए अनुकूल है। बालक-वृद्ध इसे पीकर पोषण प्राप्त कर सकते हैं। ए. बी. सी.डी. आदि सभी पोषण तत्त्व (विटामिन) इसमें मौजूद हैं। नवजात शिशु, जब तक वह अन्न ग्रहण करने के योग्य नहीं होता, केवल दूध से ही पोषण प्राप्त करता है। यही कारण है कि वह विश्व विधाता बालक के जन्म से पूर्व ही माता के स्तनों में दूध की पावन-पीयूष धाराएं बहा देता है। इसी कारण दूध को संस्कृत भाषा में 'बाल जीवन' के नाम से भी पुकारा गया है। तात्पर्य यह है कि बालक को जीवित रखने, निर्बलों को बलवान् बनाने, जवानों को पहलवान बनाने, बूढ़ों को दीर्घजीवी रखने और बीमारों को तन्दुरुस्त बनाने का दूध ही सर्वोत्कृष्ट साधन है। पाश्चात्य डॉक्टरों ने भी इस बात को निश्चित रूप से माना है कि दूध के समान पौष्टिक और बलप्रद अन्य कोई पदार्थ विश्व में विद्यमान नहीं। सच पूछो तो दूध ही इस मृत्युलोक का एक मात्र अमृत है। इसीलिए वेद भी इसे अमृत नाम से पुकारता है। वेद कहता है कि जिस घर में दुधारू गौएं बन्धी हुई हैं वह मानो प्रतिदिन दूध नहीं पीता, प्रत्युत अमृत का पान करता है। वह सदा पौष्टिक तथा स्वास्थ्यप्रद अन्न का आस्वादन करता है।

स्व आ दमे सुदुधा यस्य धेनुः स्वधां पीपाय। सुभ्वन्नमत्ति। *-ऋ. 2/35/7*

इसके विपरीत जिस घर में दूध, दही का अभाव है, जहां छाछ पीना भी बच्चों को नसीब नहीं होता, वह घर मानो साक्षात् नरक की निशानी है। ऐसे घरों का किसी कवि ने कैसा सुन्दर खाका खींचा है। कवि कहता है-

यत्र नास्ति दधि मन्थन घोषोयत्र न सन्ति लघु लघूनि शिशूनि।
यत्र नास्ति गुरु गौरवपूजा तानि किं वत गृहाणि नो वनानि।।

अर्थात्- जिस घर में प्रातःकाल माताओं के दही बिलोने की आवाज नहीं आ रही। जिस घर में उस दही, दूध और मक्खन को खाकर बलवान् बने सुन्दर और सुडौल शिशु खेल-कूद नहीं रहे। जिस घर में गुरुजनों के गौरव की पूजा नहीं होती। अर्थात् उनके तप, त्याग तथा विद्या का सम्मान नहीं होता। उनका आदर और सत्कार नहीं होता। अथवा जिस घर में उस परम परमेश्वर की पूजा अर्थात् उपासना नहीं होती। क्या वे भी घर हैं। इसका उत्तर कवि स्वयं देता है-वे घर नहीं प्रत्युत भयानक, डरावने जंगल हैं।

- आचार्य भद्रसेन
साभार: आदर्श गृहस्थ जीवन

आदर्श गृहस्थ जीवन : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त के लिए आज ही अपना आदेश प्रेषित करें या मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

Veda Prarthana - II
Regveda - 2 (A)

Dear God Help Me Correct Whatever Deficiencies in My Body and Mind

- Acharya Gyaneshwarya

यन्मे छिद्रं चक्षुषो हृदयस्य मनसो
वातितृण्णं बृहस्पति में तद्दधातु।
शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः।।

– यजुर्वेद 36/3

Yanme chhidram chakshusho hrdayasya manaso va atitrinam brahaspatih may tat dadhatu. Sham no bhavatu bhuvnasyayaspatih.

- Yajur Veda 36:3

Continue from the last issue-

Dear God, now I finally want to completely stop my sinful desires and deeds because I now realize the present and future possible terrible results (fruit, karmphal, bhog) I am expected to reap for all wrongs I have done in the past. I want to uproot and destroy my sinful desires and tendencies so that they are never able sprout again.

Dear Universal Father! You are the Ocean of Kindness, this is my humble prayer to You: Please give me wisdom, strength, determination and courage so that in the future I stay away from any sinful desires or tendencies of my mind as well as sensory and action organs such as eyes, ears, hands, feet, tongue, genital organs etc. in the future, let no thought,words or actions of mine be wrong or hurtful to others. Dear God, all of this is impossible without Your help. There fore, it is my heartfelt prayer to You again that beginning now give me such virtuous knowledge, wisdom, strength and bravery so that I may completely overcome all of my deficiencies, the wrong and sinful desires and tendencies of my mind. Dear God, please help me to make my life pure and simple so that in the near future with Your upasana i.e. meditation, and grace I may fulfill my above described goals and become worthy of Your realization, In the Vedic scriptures, the word antahkaran is generally used as a generic word to include all aspects of the mind. The mind is often subdivided into four interconnected parts called mana i.e. the portion of mind that receives input via senses from outside and executes the soul's resolutions, chit i.e. the site of our memories and sanskars, ahankara i.e. our ego and personal identity as I or me, and buddhi i.e. the site of our intellect.

In Vedic scriptures the words klishta vrittis means those activities, fluctuations or inclinations of the mind that in the long haul of life cause pain and suffering as well as agitation of the mind. Patanjali's Yog Darshanam (2:3-9) identifies five klishta vrittis. They are avidya i.e. ignorace, asmita i.e. arrogance (prompted by vanity), rag i.e. indulgent attachments and infatuations (those that bind rather than free the mind and soul), dvesha i.e. jealousy and/or hate, and abhinivesha i.e. fear (especially the fear of death). (For overcoming our mental deficiencies also see mantras #)

Sanskars are root mental impresions, inclinations, and memories that have settled in our mind based on our past deeds in this and various previous lives (incarnations) which are often dormant but periodically activate under the right circumstances.

To Be Continue....

आर्य लेखक परिषद् की कार्यकारिणी का गठन

आर्य लेखक परिषद् की साधारण बैठक आर्य समाज भोगल (जंगपुरा) नई दिल्ली के सभागार में आयोजित की गई। बैठक में संरक्षक के रूप में प्रसिद्ध साहित्यकार पद्मश्री डॉ. श्याम सिंह शशि व साहित्यकार डॉ. भवानीलाल भारतीय (जोधपुर) अध्यक्ष विद्वान व लेखक आचार्य श्री वेदप्रिय शास्त्री (बारां) उपाध्यक्ष श्री रामस्वरूप रक्षक (अजमेर), मंत्री साहित्यकार और समाज सेवी श्री अखिलेश आर्येन्दु(दिल्ली) उपमंत्री के पद पर क्रमशः साहित्यकार डॉ. हरी सिंह पाल और आर्य विद्वान लेखक सतीश आर्य का चयन किया गया। कोषाध्यक्ष के रूप में हनुमान प्रसाद (कोटा) का चयन किया गया। कार्यकारिणी में सर्वश्री धर्मपाल आर्य (दिल्ली), ब्र. राजेन्द्र आर्य (शक्ति नगर उ.प्र.), संजय सत्यार्थी (बिहार), डॉ. वेद प्रकाश विद्यार्थी (दिल्ली), डॉ, वेदपाल (बड़ौत मेरठ), डॉ. चन्द्र शेखर लोखंडे (लातूर, महाराष्ट्र) चुने गये।

– अखिलेश आर्येन्दु, मंत्री

आओ ! संस्कृत सीखें

पूर्वकालिक कत्वा व ल्यप प्रत्यय (46)

गतांक से आगे....

क्त व क्तवतु (भूतकाल के प्रत्यय)

भूतकाल को कहने में धातु (क्रियावाची शब्द) से क्त व क्तवतु प्रत्ययों का प्रयोग होता है। **उदाहरण**- 1. तेन पुस्तकं पठितम्। यहां पठ् धातु में क्त प्रत्यय का प्रयोग हुआ है अतः वाक्य का अर्थ हुआ उसके द्वारा पुस्तक पढ़ी गई। यहां ध्यान देने योग्य बात यह है कि क्त का त व क्तवतु का तवत् शेष रहता है व क्त प्रत्यय के वाक्य अधिकतर कर्मवाच्य व क्तवतु के कर्तृवाच्य में बनते हैं।

2. अहं गृहं गतवान् ।
मैं घर को गया ।
3. रामेण इदं कार्य कृतम्।
राम के द्वारा यह कार्य किया गया।
4. बालकः भोजनं भुक्तवान्।
बालक ने भोजन खाया ।
5. शिष्येण लेखः लिखितः ।
शिष्य के द्वारा लेख लिखा गया।
6. तत्र एकं पत्रं पतितवत् ।
वहां एक पत्ता गिरा ।
7. यज्ञकर्त्रा दारु छिन्नम्। यज्ञ करने वाले के द्वारा लकड़ी फाडी गई।
8. रामः रावणं हतवान् ।
राम ने रावण को मारा ।
9. बालिका विद्यालयं गता ।
बालिका विद्यालय को गयी ।
10. कृषकः अन्नम् उप्तवान् ।
किसान के अन्न बोया ।

– क्रमशः –

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय
मो. 9899875130

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रेरक प्रसंग

आर्य समाज के नियम

1904 ई. में आर्यसमाज टोहाना की स्थापना हुई। शीघ्र ही यह नगर वैदिक धर्मप्रचार का भारत-विख्यात केन्द्र बन गया। नगर तथा समीपवर्ती ग्रामों में भी शास्त्रार्थ होते रहे। 1908 ई. में टोहाना में एक भारी शास्त्रार्थ हुआ। पौराणिकों की ओर से पण्डित श्री लक्ष्मीनारायणजी बोले। आर्यसमाज की ओर से पण्डित श्री राजाराम डी. ए. वी. कालेज, लाहौर के प्राध्यापक ने वैदिक पक्ष रक्खा। शास्त्रार्थ के प्रधान थे श्री उदमीराम पटवारी।

पण्डित राजारामजी ने पूछा ''शास्त्रार्थ किस विषय पर होगा?''

पं. लक्ष्मीनारायणजी ने कहा, ''आर्यसमाज के नियमों पर।''

पण्डित राजारामजी ने कहा, हमारे नियम तो आप भी मानते हैं। शास्त्रार्थ तो ऐसे विषय पर ही हो सकता है जिसपर आपका हमसे मतभेद हो। ऐसे चार विषय हैं- (1) मूर्त्तिपूजा (2) मृतकश्राद्ध (3) वर्णव्यवस्था और (4) विधवा-विवाह।''

पौराणिक पण्डित ने कहा ''हम आपका एक भी नियम नहीं मानते।''

सूझबूझ के धनी पण्डित राजारामजी ने अत्यन्त शान्ति से शास्त्रार्थ के प्रधान श्री उदमीरामजी पटवारी से कहा, ''क्योंजी! आप हमारा कोई भी नियम नहीं मानते?'' पटवारीजी ने भी आर्यसमाज के प्रति द्वेष के आवेश में आकर कहा, 'हम आर्यसमाज का एक भी सिद्धान्त नहीं मानते।'

पण्डित राजारामजी ने कहा, 'लिखकर दो।'

पटवारीजी ने अविलम्ब लिखकर दे दिया। पण्डित राजारामजी ने उनका लिखा हुआ सभा में पढ़कर सुना दिया कि हम आर्यसमाज का एक भी सिद्धान्त नहीं मानते। तब पण्डित राजारामजी ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा, आर्यसमाज का सिद्धान्त है 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'। पौराणिकों का मत यह हुआ कि न वेद को पढ़ना न पढ़ाना, न सुनना न सुनाना। आर्यसमाज का नियम है 'सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।' पौराणिक मत का सिद्धांत बना 'असत्य को स्वीकार करने व सत्य के परित्याग में सदैव तत्पर रहना चाहिए।'

श्रोताओं को पण्डित राजारामजी की युक्ति ने जीत लिया। इस शास्त्रार्थ ने कई मनुष्यों के जीवनों की काया पलट दी।

आर्यसमाज के अद्वितीय शास्त्रार्थी श्री मनसारामजी पर कुछ-कुछ तो पहले ही वैदिक धर्म का प्रभाव था, इस शास्त्रार्थ को सुनकर तरुण मनसाराम के जीवन में एकदम नया मोड़ आया और उसने अपना जीवन ऋषि दयानन्द के उद्देश्य की पूर्ति के लिए समर्पित कर दिया। पटवारी उदमीरामजी की सन्तान ने आगे चलकर वैदिक धर्म के प्रचार में अपने-आपको लगा दिया। आर्यसमाज नयाबाँस दिल्ली के श्री दिलीपचन्दजी उन्हीं पटवारीजी के सुपुत्र हैं।

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

आर्य समाज गोविन्दपुरी का 45वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज गोविन्दपुरी के तत्त्वावधान में 45वां वार्षिकोत्सव एवं सामवेद पारायण यज्ञ 2 से 8 अप्रैल 2018 तक आयोजित किया जाएगा। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य विष्णुमित्र वेदार्थी एवं वेदपाठ ब्र. सुनील एवं साथी होंगे। भजन आचार्य रामगोपाल आर्य जी प्रस्तुत करेंगे। *-सुरेश चन्द्र गुप्ता, मंत्री*

बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बडोदरा में 13 फरवरी 18 को महर्षि दयानन्द सरस्वती बोधोत्सव पर्व बड़े धूमधाम से सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ यज्ञ से हुआ यज्ञोपरान्त श्री योगेन्द्र शर्मा एवं सहयोगियों द्वारा भजनों की अमृत वर्षा की गई। तत्पश्चात् 'दर्शन योग महाविद्यालय के आमंत्रित ब्रह्मचारी आचार्य ईश्वरानन्द ने अपने संबोधन में महर्षि दयानन्द के चरित्र एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। आर्य समाज की उपप्रधाना श्रीमती लीलाबेन वैलाणी ने कार्यक्रम को सफल बनाने में सबका धन्यवाद किया।

-राजेन्द्र पाल वर्मा, 'इन्द्र', प्रधान

स्थापना दिवस समारोह

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के तत्त्वावधान में आर्य समाज स्थापना दिवस समारोह आर्य समाज मंदिर नौरोजी नगर नई दिल्ली में 18 मार्च 2018 को मनाया जा रहा है। यज्ञ ब्रह्मा पं. महेन्द्र भाई होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ओम प्रकाश यजुर्वेदी जी(प्रधान द.दि. वे. प्र. मण्डल) करेंगे व दीप प्रज्ज्वलन श्री विद्यामित्र ठुकराल (कोषाध्यक्ष दि. आ. प्र. सभा) द्वारा सम्पन्न होगा।

-प्रकाशवीर शास्त्री, मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 27 मई से 3 जून

सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल का राष्ट्रीय शिविर 27 मई से 3 जून 2018 तक इलाहाबाद में लगाया जाएगा। वीरांगनाएं अधिक से अधिक संख्या में शिविर में पहुंचकर इस अवसर का लाभ उठाएं। अधिक जानकारी के लिए सचिव श्रीमती आरती खुराना मो. 9910234595 से सम्पर्क करें।

- साध्वी डॉ. उत्तमायति, प्रधान संचालिका

अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के तत्त्वावधान में 37वां वैचारिक क्रान्ति शिविर: 17 से 21 मई, 2018

स्थान : आर्यसमाज रानी बाग, मेन बाजार, दिल्ली-110034

आर्यजन अभी से तिथियां नोट कर लेवें और अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर देश के विभिन्न आदिवासी क्षेत्रों से पधारे कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें। *- महामन्त्री*

विश्व शान्ति महायज्ञ के साथ छपरा में नई आर्य समाज की स्थापना

छपरा (बिहार) के एक मात्र आर्य समाजी श्री कृष्ण कुमार सिंह की प्रेरणा से विजय वस्त्रालय के श्री विजय बहादुर सिंह ने अपने 50वें जन्म दिवस पर घर में 3-4 दिनों के सत्संग का निश्चय किया और ईश्वर कृपा से वह एक बृहत् उत्सव तथा आर्य समाज के गठन के रूप में परिणित हो गया। सत्संग में पतंजलि समिति के श्री सुनील त्यागी ने योगासन व प्राणायाम आदि करवाये। देवरिया की श्रीमती नयनश्री प्रज्ञा ने समधुर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम के अन्तिम दिन होशंगाबाद के आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी ने वेद मंत्रों की व्याख्या की व आर्यसमाज की नई कार्यकारिणी का गठन कर सभी पदाधिकारियों को शपथ दिलवाई। प्रधान श्री विजय बहादुर सिंह, मंत्री श्री रमाकांत एवं कोषाध्यक्ष श्री प्रकाश सोनी को सर्वसम्मति से चुना गया। मंच संचालन श्री कृष्ण कुमार सिहं ने किया। *-विजय बहादुर सिंह, प्रधान*

शोक समचार

पं. नन्दलाल निर्भय को पुत्र शोक

आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक विद्वान सिद्धहथ लेखक ओजसवी कवि पं. नन्दलाल निर्भय सिंद्धान्ताचार्य ग्राम बहीन (पलवल) हरियाणा के ज्येष्ठ पुत्र श्री ब्रह्मदेव आर्य का गत दिनों हृदयगति रुक जाने से 18 फरवरी पार्क अस्पताल फरीदाबाद (हरियाणा) में निधन हो गया। उनका शान्तियज्ञ आचार्य श्री नेतराम शास्त्री होडल (हरियाणा) ने सम्पन्न कराया। उनकी स्मृति में श्रद्धांजलि सभा 25 फरवरी को सम्पन्न हुई। जिसमें विधायक श्री उदयभान, अधिवक्ता चौ. राजेन्द्र सिंह, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से पं. बालकिशन आर्य सहित सैंकड़ो आर्यजनों ने उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

20वां आर्य परिवार वैवाहिक परिचय सम्मेलन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में 20वां परिचय सम्मेलन का आयोजन 6 मई, 2018 को आर्यसमाज कीर्ति नगर, नई दिल्ली में प्रातः 10 बजे से किया जाएगा।

समस्त आर्य परिवारों से अनुरोध है कि अपने विवाह योग्य पुत्र-पुत्रियों के आर्य परिवारों से सम्बन्ध जोड़ने के लिए परिचय सम्मेलन में शीघ्रातिशीघ्र पंजीकरण कराने का कष्ट करें। पंजीकरण फार्म पूर्ण विवरण के साथ **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **300/- रुपये** का डिमाण्ड ड्राफ्ट संलग्न भेजें अथवा 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम **खाता संख्या 910010001816166 IFSC - UTIB0000223 एक्सिज बैंक करोल बाग शाखा** में जमा कराकर रसीद फार्म के साथ भेंजे। आवेदन भेजने की **अन्तिम तिथि 26 अप्रैल, 2018** है। इसके बाद प्राप्त आवेदनों को विवरणिका में प्रकाशित नहीं किया जा सकेगा। पंजीकरण फॉर्म **www. thearyasamaj.org** से डाउनलोड किया जा सकता है। आप अपना/अपने बच्चों का पंजीकरण **www.matrimony. thearyasamaj.org** पर ऑनलाईन भी कर सकते हैं। अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

अर्जुनदेव चड्ढा, राष्ट्रीय संयोजक (मो. 9414187428)

एस. पी. सिंह, संयोजक, दिल्ली (मो. 9540040324)

प्रतिदिन 12 घण्टे चलने वाला दिव्य अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास, पानीपत के अध्यक्ष महात्मा वेदपाल आर्य द्वारा आयोजित वर्ष भर लगातार प्रतिदिन 12 घण्टे (सूर्योदय से सूर्यास्त तक) चलने वाला दिव्य ''अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र'' आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्मृति शेष पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी रोजड़ (गुजरात) की प्रेरणा व आशीर्वाद से उन्हीं के निर्देशन में 1 अक्टूबर 2017 से नियमित रूप से पूरे दिन आर्य समाज मन्दिर बसई, गुरुग्राम (हरियाणा) में चल रहा है जोकि 30 सितम्बर 2018 तक अनवरत जारी रहेगा। आयोजन में प्रतिदिन लगभग 60-70 महिलाएं, पुरुष एवं विद्यार्थियों का आना-जाना लगा रहता है। यह संख्या कई बार 100 को भी पार कर जाती है। हरियाणा की चारों दिशाओं से व अन्य राज्यों से श्रद्धालु अपनी-अपनी आहुति प्रदान करने आ रहे हैं। यज्ञ की सभी प्रकार की व्यवस्थाएं एवं प्रशिक्षण यज्ञ प्रभारी श्री सन्तराम आर्य दयानन्द मठ रोहतक, अपने नियंत्रण में चलाकर अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

- आर्य सुरेन्द्र सिंह तोमर, संयोजक

प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय (सासनी) हाथरस

मान्यता-गुरुकुल कांगड़ी वि0वि0 हरिद्वार एवं सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी। प्रवेश योग्यता परीक्षा के आधार पर लिया जायेगा। प्रवेश कक्षा शिशु से नवीं तक किसी भी कक्षा में लिया जा सकता है।

कक्षा 11वीं और 12वीं (उत्तरमध्यमा, विद्याविनोद, शास्त्री, विद्यालंकार) कक्षा में भी प्रवेश लिया जा सकता है। 9वीं से 12वीं कक्षा कला वर्ग एवं विज्ञान वर्ग का पाठयक्रम संचालित है। इसके अतिरिक्त संगीत, खेलकूद तथा शारीरिक प्रशिक्षण, योग प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण। सम्पर्क सूत्र- 09258040119, 09458480781 *-डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, मुख्याधिष्ठात्री एवं आचार्या*

प्रवेश सूचना

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल महाविद्यालय ट्रस्ट

ग्राम व पोस्ट जसात-123502, तहसील पटौदी, जिला गुरुग्राम (हरि.) में कक्षा छठी से नवीन सत्र में प्रवेश प्रारम्भ हैं। सम्पर्क करें- 9416188854, 9992068104

- आचार्या

पृष्ठ 3 का शेष

बर्मा के बाद श्रीलंका, क्यों.....

दुनिया में 56 मुसलमान राष्ट्र हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि एक देश में जितनी विचारधारा के मुसलमान हैं वे अपनी सत्ता स्थापित करने की जुगाड़ लगाते रहते हैं। इसलिए इन देशों में मुसलमानों के अनेक गुट सत्ता हथियाने के लिए लड़ने और युद्ध करने के लिए, हमेशा तैयार रहते हैं। जिन देशों में उनकी संख्या कम होती है वे पहले तब्लीग और कन्वर्जन के नाम पर अपना संख्याबल बढ़ाते हैं। इस संख्या को बढ़ाने के लिए कन्वर्जन से लगाकर अधिक बच्चे पैदा करने की मुहिम चलाकर वे अपना संख्याबल बढ़ाते हैं और फिर कुछ ही वर्षों में एक नए देश की मांग करने लगते हैं। एशिया को विजय कर लेने के बाद वे अफ्रीका की ओर बढ़े। अवसर मिला और यूरोप में भी घुसे। आज इस्लाम परस्तों की यह लालसा है कि वे नम्बर एक पर पहुँच जाएं। वे किसी न किसी बहाने युद्ध को निमंत्रण देते रहते हैं। यह मुस्लिम कट्टरवादियों की बुनियादी रणनीति है जिस पर चलकर मुस्लिम जनता को युद्ध के लिए तैयार किया जा सकता है। अतः हो सकता आज लंका और बर्मा के बौद्ध इस रणनीति का प्रतिरोध कर अपनी प्रतिक्रिया उसी भाव से प्रकट कर रहे हों? जो भी हो फिलहाल शांति हो सकती है लेकिन वह कितने दिन स्थिर रहेगी इस पर प्रश्न चिन्ह लगा रहेगा? *- राजीव चौधरी*

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 12 मार्च, 2018 से रविवार 18 मार्च, 2018

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 15/16 मार्च, 2018

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 14 मार्च, 2018

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रदूषण निवारण के लिये 'यज्ञ' .....

प्रकाश संश्लेषण (Phatosynthesis)
वाष्पीकरण (Evaporation),
संघनन (घनीभवन) (Condensation),
धूनीकरण (Fumigation) आदि के द्वारा दृव्य पदार्थों का प्रभाव असंख्य गुना बढ़ कर पर्यावरण एवं व्यक्तित्व में निखार ला देता है। होत्रकर्म (हवन) में दो प्रक्रिया दिखाई पड़ती है- 1. अन्न-अन्नाद (एसीमिलेशन और एलिमिलेशन) की 2. पोषण प्राप्त करने के बाद संबर्धन (सेल फ़िजन, सेलडिवीजन या ग्रोथ) की प्रक्रिया। इन सबके आधार पर कहा गया है कि यज्ञग्नि में होमा हुआ पदार्थ सूक्ष्म होकर शीघ्र वायुमण्डल में व्याप्त हो जाता है, व्याप्त होने से अन्तरिक्षस्थ ताप, विद्युत् एवं सूर्य किरणों से उसकी घर्षण क्रिया प्रारम्भ हो जाती है जिससे प्रदूषणों का निवारण होकर पर्यावरण की आरोग्यता सिद्ध होती है।

जड़ी-बूटियों का यजन अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। इससे स्थानीय पर्यावरण औषधियुक्त बनता है और उसका अनायास लाभ वहां के निवासियों को सुगंधि, स्फूर्ति तथा शान्ति के रूप में मिलता रहता है। हवन से आरोग्यवर्धक ऋणावेशित कणों का निर्माण होता है। नवीन वैज्ञानिक तथ्य का उद्घाटन किया गया है कि यज्ञ से ऋणायणों का उत्पादन और संकेन्द्रण निष्पन्न होता है। उल्लेखनीय है कि हम हवा के जिस विशाल समुद्र में रहते हैं, वह कई गैसों का मिश्रण है। इन गैसों का जब कभी अत्यधिक ऊर्जा से आमना-सामना होता है तो उसके अणु-परमाणु आयनीकृत हो जाते हैं और ऋण तथा धन प्रकृति के कणों को जन्म देते हैं। वैज्ञानिकों का कहना है कि घनायन स्वास्थ्य के लिये हानिकारक होते हैं जबकि ऋणायन लाभकारी। मूर्धन्य विज्ञानी अल्बर्ट क्रूजर एवं सहयोगियों के चूहों पर प्रयोग से पता चला कि ऋणायनों की अधिकता वाले परिवेश में रक्त-सेरोटिन स्तर में गिरावट आती है, जिससे तनाव, उन्माद, अनिद्रा आदि में लाभ होता है। यज्ञ से प्रकृति का प्राणायाम हो जाता है। जैसे योगाभ्यास में प्राणायाम द्वारा हम अपनी आन्तरिक स्थिति को सुधारते हैं उसी प्रकार जागतिक साधना में यज्ञ के द्वारा बाह्य-जगत का परिष्कार किया जाता है।

यज्ञाग्नि में रोगनाशक-सुगंधित-पुष्टिकारक-आयुवर्द्धक-मिष्टगुण वाले औषधियों को जलाने से पौष्टिक तथा स्वास्थ्यवर्द्धक विकिरण निर्मित होता है, जो संहारक बर्मो के घातक विकिरण की अपेक्षा असंख्य गुना लाभकारी व उपयोगी होता है। यज्ञीय ऊर्जा से विनिर्मित विकिरण में ''जीन्स'' को भी शुद्ध-संस्कारवान और स्वस्थ बनाने की प्रबल क्षमता होती है। साथ ही मंत्रों की ध्वनियां उस वायुभूत शुद्धता को तरंगित कर आकाश में फैला देती है। ऋग्वेद 03/59/01 के मंत्रदृष्टा ऋषि विश्वामित्र ने मंत्र पाठ किया है ''**मित्राय हव्यं घृतवज्जुहोत**''-मित्र (प्राणप्रदवायु) की प्राप्ति के लिये घृत आदि से युक्त हविष्यान्न की आहुति दें। यजुर्वेद में भी मंत्रगान है ''सं ते वायुर्मातरि पूवा दघातु =यज्ञ से शुद्ध हुआ आकाशगामी पवन अच्छे प्रकार पुष्ट करें।

रामायण काल में दैहिक-दैविक-भौतिक दु:खों का अभाव था, उसका कारण था यज्ञों का विविध प्रयोग। अयोध्या में समृद्ध गुणी, वेद पारंगत एवं यज्ञकर्त्ता याजक निवास करते थे (अयोध्या काण्ड सर्ग 71/श्लोक 20) उस काल में राजा के द्वारा हवन करने-कराने की व्यवस्था की जाती थी। ऐसा प्रमाण मिलता है-श्री राम ने चित्रकूट में भरत से पूछा था ''**कच्चिदग्निषु ते युक्तों विधिज्ञो मतिमानृजु:। हुतं च होष्यमाणं च काले वेदयते सदा**'' = तुमने अपने राज्य में अग्निहोत्र करने के लिये बुद्धिमान सरलचित्त एवं विधियों के ज्ञाता को ही नियुक्त किया है, जो समय पर यज्ञ करते-कराते हैं। (अयोध्या काण्ड सर्ग 100 श्लोक 12) कलियुग में वेदों के वैज्ञानिक भाष्यकार महर्षि दयानन्द सरस्वती ने प्रजाओं पर पिता की तरह पालन-रक्षण तथा शासन करने वाले के लिये कर्त्तव्य कर्म का निर्धारण करते हुए यजुर्वेद अध्याय 11 मंत्र 38 के भावार्थ में लिखा है ''राजा को चाहिये कि दो प्रकार के वैद्य रखे। एक तो सुगंध आदि पदार्थों के होम से वायु वर्षा जल और औषधियों को शुद्ध करें। दूसरे श्रेष्ठ विद्वान् वैद्य होकर निदान आदि द्वारा सब प्राणियों को रोग रहित रखें। इस कर्म के बिना कहीं भी सार्वजनिक सुख नहीं हो सकता।''

सार्वजनिक सुख-समृद्धि के लिये पर्यावरण का परिशुद्ध होना अत्यधिक अनिवार्य है। प्राणी और पर्यावरण का परस्पर गहरा सम्बन्ध है।आधिदैविक दृष्टि से पर्यावरण भगवान है तो प्रदूषण अकाल मौत तथा प्रलय का मूल कारण है। इसलिये पर्यावरण को बचाये बिना समग्र स्वस्थता असंभव है। प्रदूषण निवारण के सर्वमान्य उपायों में हवन महत्त्वपूर्ण उपाय हो सकता है, अत: सरकार को अपने एजेण्डे में सार्वजनिक यज्ञ निरंतर कराते रहने की व्यवस्था करनी चाहिये। पर्यावरण, चिकित्सक के रूप में यज्ञाचार्यो की नियुक्तियां, यज्ञस्थलों का निर्धारण तथा हवन के पदार्थों की व्यवस्था सुनिश्चित करने का प्रावधान करना चाहिये। जगत काहित चाहने वालों को इसकी पहल करनी होगी तभी राजनैतिक इच्छशक्ति जगेगी, प्रदूषण से निजात पायेंगे, पर्यावरण और प्राणी बच पायेंगे।

- डॉ. कमल नारायण आर्य
वैदिक पर्यावरणविद, रायपुर

प्रतिष्ठा में,

तेजी से बढ़ रहे हैं आर्यसमाज YouTube चैनल के दर्शक

61 लाख से ज्यादा लोगों ने देखा अब तक

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें।

यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें।

यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह